MVS FOUNDATION

FREE NOTES

EARLY CHILDHOOD CARE AND EDUCATION (376)

CHAPTERWISE NOTES

EARLY CHILDHOOD CARE AND EDUCATION

Sl. No.	Module	Chapters (Public Examination)	Marks
1	**Module 1 : Early Childhood Care and Education**	L-1 ECCE: Meaning and Significance L-2 Early Childhood in India L-4 ECCE Policies, Schemes and Programmes	20
2	**Module 3 : Curriculum, Practices and Progress**	L-10 Care of Children in Early Years L-11 Play and Early Learning L-13 How Children Learn	25

Component	Details	Marks
Public Exam (Selected Modules 1,3)	Total Chapters : **6**	45
Practical Exam	Practical	20
TMA	Tutor Marked Assignment	16
Final Possible Marks		**81 Marks**

विषय- सूची

1	प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा: अर्थ और महत्व
2	भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था
3	भारत में ईसीसीई नीतियाँ, योजनाएँ तथा कार्यक्रम
4	प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की देखभाल
5	खेल और प्रारंभिक अधिगम
6	बच्चे किस प्रकार सीखते हैं? ((प्रारंभिक अधिगम एवं शिक्षण)

1

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभालऔर शिक्षा: अर्थ और महत्व

परिचय

प्रारंभिक बाल्यावस्था जीवन के सबसे महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। इस समय बच्चे के मस्तिष्क का विकास सबसे तीव्र गति से होता है। ECCE का मुख्य उद्देश्य बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है ताकि वह स्कूल और जीवन के लिए तैयार हो सके।

ECCE का अर्थ और महत्व

- **प्रारंभिक बाल्यावस्था :** यह जन्म से लेकर 6 वर्ष तक की आयु की अवस्था है।
- इसे 'आधारभूत वर्ष' कहा जाता है क्योंकि इसी समय शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास की नींव पड़ती है।
- **न्यूरोसाइंस (Neuroscience) :** शोध बताते हैं कि इस उम्र में मस्तिष्क की कोशिकाओं के बीच संबंध बहुत तेज़ी से बनते हैं।

ECCE के घटक

ECCE तीन मुख्य शब्दों से मिलकर बना है:

- **प्रारंभिक बाल्यावस्था :** जन्म से 6 वर्ष की अवधि।
- **देखभाल :** इसमें बच्चों का स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और सुरक्षा शामिल है।
- **शिक्षा :** इसका अर्थ किताबी पढ़ाई नहीं, बल्कि खेल-कूद और गतिविधियों के माध्यम से सीखना है।

ECCE के उद्देश्य

- बच्चे का होलिस्टिक (Holistic) यानी सर्वांगीण विकास करना।
- बच्चों में अच्छी आदतों और सामाजिक गुणों का विकास करना।
- उन्हें औपचारिक स्कूल (कक्षा 1) के लिए तैयार करना।
- बच्चों की जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देना।

प्रारंभिक हस्तक्षेप का महत्व (Early Intervention)

- **प्रारंभिक हस्तक्षेप :** इसका अर्थ है विकास में किसी भी देरी या कमी को जल्दी पहचानना और उसे ठीक करने के लिए कदम उठाना।
- यदि किसी बच्चे को सुनने, बोलने या देखने में समस्या है, तो शुरुआती वर्षों में सुधार की संभावना सबसे अधिक होती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

भारतीय और वैश्विक संदर्भ में ECCE

- भारत में **ICDS** (एकीकृत बाल विकास सेवाएँ) दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्रम है जो आंगनबाड़ियों के माध्यम से ECCE प्रदान करता है।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) :** अब ECCE को स्कूली शिक्षा का हिस्सा माना गया है (5+3+3+4 ढांचा)।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: प्रारंभिक बाल्यावस्था को 'आधारभूत वर्ष' क्यों कहा जाता है?

उत्तर - जन्म से 6 वर्ष तक की आयु को आधारभूत वर्ष इसलिए कहते हैं क्योंकि इस दौरान बच्चे के मस्तिष्क का 85-90% विकास हो जाता है। इसी अवस्था में बच्चे के व्यवहार, सीखने की क्षमता और स्वास्थ्य की नींव पड़ती है, जो उसके पूरे जीवन को प्रभावित करती है।

प्रश्न 2: 'होलिस्टिक डेवलपमेंट' (सर्वांगीण विकास) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - सर्वांगीण विकास का अर्थ है बच्चे के विकास के सभी क्षेत्रों पर समान ध्यान देना। इसमें शारीरिक, संज्ञानात्मक (मानसिक), सामाजिक, भावनात्मक और भाषा विकास शामिल है। केवल अक्षरों को रटना विकास नहीं है, बल्कि बच्चे का पूरी तरह से स्वस्थ और सक्रिय होना ज़रूरी है।

प्रश्न 3: ECCE में 'देखभाल' (Care) का क्या महत्व है?

उत्तर - देखभाल का मतलब है बच्चे को सुरक्षित वातावरण, पौष्टिक आहार, समय पर टीकाकरण और प्यार देना। यदि बच्चे की शारीरिक देखभाल अच्छी नहीं होगी, तो उसका मस्तिष्क सीखने के लिए तैयार नहीं हो पाएगा। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

प्रश्न 4: प्रारंभिक हस्तक्षेप क्यों ज़रूरी है?

उत्तर - कुछ बच्चों में विकास की गति धीमी हो सकती है या उनमें कोई विशेष आवश्यकता हो सकती है। प्रारंभिक हस्तक्षेप से इन समस्याओं को जल्दी पहचानकर सही समय पर डॉक्टर या शिक्षक की मदद ली जा सकती है, जिससे बच्चा सामान्य जीवन जी सके।

प्रश्न 5: ECCE के दो मुख्य उद्देश्य बताइए।

उत्तर - बच्चे को एक सुरक्षित और उत्तेजक वातावरण प्रदान करना जहाँ वह खेल-खेल में सीख सके। 2. बच्चे में स्कूल के लिए आवश्यक कौशल (जैसे बातचीत करना, तालमेल बिठाना और ध्यान केंद्रित करना) विकसित करना ताकि वह प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार हो सके।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 6: भारत में ECCE के विकास में किन विचारकों का योगदान रहा है?

उत्तर - गिजुभाई बधेका ने 'बाल मंदिर' की स्थापना की, जबकि ताराबाई मोदक ने गतिविधि-आधारित शिक्षा पर जोर दिया । गांधीजी, टैगोर और जाकिर हुसैन जैसे विचारकों ने बच्चों को उनकी मातृभाषा और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में शिक्षित करने का समर्थन किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2

भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था

प्रारंभिक बाल्यावस्था

- जन्म से 6 वर्ष तक का समय तेजी से विकास का समय होता है।
- इस अवधि में बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास की नींव रखी जाती है।
- जीवन के पहले तीन वर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते हैं।
- उचित देखभाल, पोषण और उत्तेजनात्मक वातावरण आवश्यक है।

भारत में बच्चों की स्थिति

- भारत में 0-6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों की संख्या लगभग 15.8 करोड़ है।
- बच्चों का अस्तित्व, सुरक्षा और विकास राष्ट्र के भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- एक बड़ा हिस्सा उन बच्चों का है जो आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर वर्गों से आते हैं।

मौलिक अधिकार

- **धारा 14 :** कानून के समक्ष समानता। भारत में सभी को समान कानूनी सुरक्षा प्राप्त होगी।
- **धारा 15 :** धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध। राज्य को महिलाओं, बच्चों और पिछड़े वर्गों के लिए विशेष प्रावधान बनाने का अधिकार है।
- **धारा 17 :** 'अस्पृश्यता' (छुआछूत) का अंत और इसका किसी भी रूप में प्रयोग वर्जित।
- **धारा 19(1):** नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्वक इकट्ठा होने, संघ बनाने और भारत में कहीं भी बसने का अधिकार।
- **धारा 21 :** जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार।
- **धारा 21A :** 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार।
- **धारा 24 :** 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों, खानों या किसी जोखिम वाले काम में लगाने पर प्रतिबंध।

राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत

- **धारा 39** : बच्चों के शोषण को रोकना और उन्हें स्वतंत्र व गरिमामय वातावरण में विकास के अवसर प्रदान करना।
- **धारा 42:** काम की न्यायपूर्ण स्थितियाँ और मातृत्व राहत (Maternity relief) के प्रावधान।
- **धारा 45:** संविधान लागू होने के 10 वर्ष के भीतर 14 वर्ष तक के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रयास।
- **धारा 46:** अनुसूचित जातियों, जनजातियों और कमजोर वर्गों के शैक्षिक व आर्थिक हितों की सुरक्षा।
- **धारा 47:** लोगों के पोषण स्तर, जीवन स्तर और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार करना।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रमुख सरकारी नीतियां और कार्यक्रम

- **एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) :** 1975 में शुरू हुई यह योजना बच्चों के लिए पूरक पोषण, टीकाकरण, स्वास्थ्य जांच और स्कूल-पूर्व शिक्षा का एक प्रमुख पैकेज है।
- **राष्ट्रीय बाल नीति (National Policy for Children), 2013 :** यह नीति बच्चों के अस्तित्व, स्वास्थ्य, पोषण और विकास के अधिकारों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराती है।
- **राष्ट्रीय ECCE नीति, 2013 :** इसका उद्देश्य 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करना है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था को प्रभावित करने वाले कारक:

- आनुवंशिकता और पर्यावरण
- व्यायाम
- बच्चे का लिंग
- पोषण और पारिवारिक प्रभाव
- भौगोलिक प्रभाव
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति
- टीकाकरण
- मातृ स्वास्थ्य

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: भारत में बच्चों की वर्तमान स्थिति का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर - भारत में बच्चों की संख्या बहुत अधिक है। 0-6 वर्ष के आयु वर्ग में लगभग 15.8 करोड़ बच्चे हैं, जो कुल जनसंख्या का 13.1% हैं। इनमें से अधिकांश बच्चे ग्रामीण क्षेत्रों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों से हैं, जिन्हें विकास के लिए विशेष ध्यान की आवश्यकता है।

प्रश्न 2: कुपोषण बच्चों के विकास को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर - कुपोषण के कारण बच्चों में 'स्टंटिंग' (कम लंबाई) और 'वेस्टिंग' (कम वजन) जैसी समस्याएं होती हैं। इससे उनकी शारीरिक वृद्धि रुक जाती है, मानसिक विकास धीमा हो जाता है और उनकी बीमारियों से लड़ने की शक्ति कम हो जाती है, जो उनके पूरे जीवन को प्रभावित करता है।

प्रश्न 3: आई.सी.डी.एस. (ICDS) योजना के किन्हीं तीन लाभों को लिखिए।

उत्तर - ICDS योजना के तीन मुख्य लाभ हैं:

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1. बच्चों और गर्भवती महिलाओं को पूरक पोषण प्रदान करना।

2. समय पर टीकाकरण और स्वास्थ्य जांच की सुविधा देना।

3. छोटे बच्चों को स्कूल जाने से पहले अनौपचारिक शिक्षा (Pre-school Education) के लिए तैयार करना।

प्रश्न 4: संविधान का अनुच्छेद 45 ECCE के बारे में क्या प्रावधान करता है?

उत्तर - संविधान का अनुच्छेद 45 राज्य को यह निर्देश देता है कि वह 6 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों की शुरुआती देखभाल और शिक्षा (ECCE) की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा। यह बच्चों के शुरुआती वर्षों के विकास को सरकारी जिम्मेदारी के रूप में मान्यता देता है।

प्रश्न 5: राष्ट्रीय बाल नीति, 2013 के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर - राष्ट्रीय बाल नीति, 2013 का मुख्य उद्देश्य हर बच्चे के लिए जीवन के अधिकार, स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और सुरक्षा को प्राथमिकता देना है। यह नीति सुनिश्चित करती है कि बच्चों को एक ऐसा वातावरण मिले जहाँ वे सुरक्षित रहकर अपना सर्वांगीण विकास कर सकें।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4

भारत में ईसीसीई नीतियाँ योजनाएँ तथा कार्यक्रम

परिचय

भारत में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समय-समय पर कई नीतियां और कार्यक्रम बनाए गए हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य बच्चों को कुपोषण से बचाना और उन्हें शिक्षा के लिए तैयार करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां और ईसीसीई का स्थान

शिक्षा नीतियों ने समय के साथ ईसीसीई को केवल 'खेल' से बदलकर 'शिक्षा की बुनियाद' बना दिया है।

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति NPE 1986 :** यह नीति छोटे बच्चों के समग्र विकास के लिए ECCE को एक महत्वपूर्ण कारक मानती है। यह 'खेल-आधारित' शिक्षा पर जोर देती है और औपचारिक तरीकों (जैसे रटना या 3Rs) को छोटे बच्चों के लिए हतोत्साहित करती है।
- **राष्ट्रीय पोषण नीति, 1993 :** इसका लक्ष्य बच्चों में कुपोषण को खत्म करना है। यह ICDS (एकीकृत बाल विकास सेवाओं) के विस्तार और माताओं को पोषण संबंधी जानकारी देने पर जोर देती है।
- **राष्ट्रीय बाल नीति, 2013:** बच्चों को देश की "अत्यधिक महत्वपूर्ण परिसंपत्ति" घोषित किया गया। यह उनके अस्तित्व, स्वास्थ्य और शिक्षा के अधिकारों की पुष्टि करती है।
- **राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा नीति (ECCE), 2013:** 6 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण ECCE देने का लक्ष्य। इसका उद्देश्य आनंदपूर्ण और समावेशी शिक्षा से सक्रिय अधिगम विकसित करना है।
- **भारत नवजात शिशु कार्य योजना (INAP), 2014:** इसका मुख्य उद्देश्य नवजात शिशुओं की मृत्यु दर और मृत प्रसव (Stillbirth) को कम करना है। इसके 6 प्रमुख स्तंभ हैं, जिनमें प्रसव पूर्व और प्रसव के दौरान देखभाल शामिल है।
- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (NHP), 2017:** स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश, रोग रोकथाम और सभी आयु में अच्छे स्वास्थ्य पर जोर देती है।

स्वास्थ्य और सतत विकास लक्ष्य (SDG)

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM), 2013:** इसका लक्ष्य सभी के लिए सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है, जिसमें प्रजनन और बाल स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया गया है।
- **सतत विकास लक्ष्य (SDG), 2030:** संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित 17 लक्ष्यों में से **लक्ष्य 4.2** यह सुनिश्चित करता है कि 2030 तक सभी लड़कियों और लड़कों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास और पूर्व-प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हो।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

योजनाएं और मिशन (2016-2018)

- **बच्चों के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (NPAC), 2016:** यह "अंतिम बच्चा पहले" (Last child first) के सिद्धांत पर आधारित है, जो सबसे असुरक्षित बच्चों (जैसे बेघर या प्रभावित बच्चे) तक पहुंचने पर केंद्रित है।
- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (NHP), 2017:** यह स्वास्थ्य प्रणालियों को बेहतर बनाने, बीमारियों की रोकथाम और तकनीकी पहुंच बढ़ाने पर जोर देती है।
- **पोषण अभियान (राष्ट्रीय पोषण मिशन), 2018:** मार्च 2018 में राजस्थान के झुंझुनू से शुरू किया गया। इसका लक्ष्य 2022 तक भारत को कुपोषण मुक्त बनाना है। इसका नारा है: **"सही पोषण - देश रोशन"**।

कार्यक्रम तथा योजनाएँ

माता तथा बच्चे के स्वास्थ्य तथा सामान्य हितों की चिन्ता ने सरकार को इस जरूरत को पूरा करने के लिये कार्यक्रमों तथा योजनाओं को समय-समय पर आरम्भ करने के लिये प्रेरित किया है।

1. एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (ICDS) : एक सुरक्षा कवच

ICDS भारत की सबसे महत्वपूर्ण योजना है जो बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा को एक साथ जोड़ती है। इसके माध्यम से दी जाने वाली सेवाएँ निम्नलिखित हैं :

आंगनवाड़ी केंद्र : यह इस कार्यक्रम की मुख्य इकाई है जहाँ स्थानीय महिलाएं (आंगनवाड़ी कार्यकर्ता) बच्चों की देखभाल करती हैं।

छह मुख्य सेवाएँ :

1. **पूरक पोषण :** कुपोषण दूर करने के लिए भोजन प्रदान करना।
2. **टीकाकरण :** बीमारियों से बचाने के लिए समय पर टीके लगवाना।
3. **स्वास्थ्य जाँच :** बच्चों की नियमित शारीरिक जाँच।
4. **संदर्भ सेवाएँ :** बीमार बच्चों को बड़े अस्पतालों में भेजना।
5. **स्कूल-पूर्व अनौपचारिक शिक्षा :** 3-6 साल के बच्चों को खेल-खेल में सिखाना।
6. **स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा :** माताओं को बेहतर स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देना।

2. मध्याह्न भोजन योजना : मध्याह्न भोजन योजना (1995) विश्व का सबसे बड़ा स्कूली आहार कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य सरकारी स्कूलों के बच्चों का पोषण स्तर सुधारना है। इसके माध्यम से छात्रों के नामांकन और उपस्थिति में वृद्धि हुई है। वर्ष 2007 में इसका विस्तार कर कक्षा 8 तक के विद्यार्थियों को भी इसमें शामिल किया गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3. जननी सुरक्षा योजना (JSY) : जननी सुरक्षा योजना (JSY) को 12 अप्रैल 2005 को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत एक "सुरक्षित मातृत्व हस्तक्षेप" के रूप में शुरू किया गया था। यह योजना विशेष रूप से गरीब गर्भवती महिलाओं को संस्थागत प्रसव (अस्पताल में जन्म) के लिए प्रोत्साहित करती है, ताकि मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम किया जा सके।

4. राष्ट्रीय ईसीसीई नीति 2013 : गुणवत्ता पर ज़ोर

यह नीति भारत में ईसीसीई के स्तर को सुधारने के लिए मील का पत्थर साबित हुई। इसकी मुख्य बातें हैं :

1. गुणवत्ता मानक : हर केंद्र में स्वच्छ पानी, शौचालय, पर्याप्त रोशनी और बच्चों के लिए सुरक्षित खिलौने होने चाहिए।

2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) : यह एक गाइड की तरह है जो बताता है कि बच्चों को उम्र के हिसाब से क्या और कैसे सिखाया जाना चाहिए।

3. समावेशी शिक्षा : विकलांग बच्चों और समाज के पिछड़े वर्गों के बच्चों को समान अवसर देना।

5. कामकाजी माताओं के लिए सहायता: क्रेच योजना

- **राजीव गांधी राष्ट्रीय क्रेच योजना :** यह उन परिवारों की मदद करती है जहाँ माता-पिता दोनों काम पर जाते हैं।
- **मातृत्व लाभ अधिनियम 2017 :** इसके तहत **50 या अधिक कर्मचारियों** वाले संस्थानों में क्रेच (पालनाघर) की सुविधा अनिवार्य है ।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) 1986 का ईसीसीई में क्या योगदान है?

उत्तर - NPE 1986 ने पहली बार ईसीसीई को मानव विकास के लिए एक आवश्यक 'आधार' रूप में मान्यता दी। इस नीति ने यह स्पष्ट किया कि प्रारंभिक बाल्यावस्था के दौरान दी जाने वाली देखभाल और शिक्षा बच्चे के भविष्य के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य है।

प्रश्न 2: 'राजीव गांधी राष्ट्रीय क्रेच योजना' का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर: यह योजना मुख्य रूप से उन कामकाजी माताओं के बच्चों (0-6 वर्ष) के लिए है जो बाहर काम करती हैं । इसका उद्देश्य बच्चों को एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करना है जहाँ उनकी देखभाल, पोषण और प्रारंभिक शिक्षा का ध्यान रखा जा सके।

प्रश्न 3: राष्ट्रीय ईसीसीई नीति 2013 के कोई दो मुख्य लक्ष्य बताइए।

उत्तर - भारत के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा सुनिश्चित करना। 2. बच्चों के सीखने के लिए एक 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा' (NCF) तैयार करना ताकि पूरे देश में शिक्षा का स्तर समान और बेहतर हो सके।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 4: एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (ICDS) कार्यक्रम के प्रमुख घटक क्या हैं?

उत्तर - ICDS भारत का सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जो बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा को जोड़ता है । इसके मुख्य घटक निम्नलिखित हैं:

- **पूरक पोषण :** बच्चों में कुपोषण को दूर करने के लिए पौष्टिक भोजन प्रदान करना।
- **टीकाकरण और स्वास्थ्य जाँच :** बीमारियों से बचाव और बच्चों के शारीरिक विकास की नियमित निगरानी करना।
- **स्कूल-पूर्व अनौपचारिक शिक्षा :** 3-6 साल के बच्चों को खेल-खेल में प्राथमिक स्कूल के लिए तैयार करना।

प्रश्न 5: एक गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई केंद्र के लिए निर्धारित मानकों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर - राष्ट्रीय ईसीसीई नीति के अनुसार, एक प्रभावी केंद्र के लिए कुछ अनिवार्य गुणवत्ता मानक निर्धारित किए गए हैं:

- **सुरक्षित बुनियादी ढांचा :** केंद्र का वातावरण बच्चों के अनुकूल, स्वच्छ और सुरक्षित होना चाहिए। इसमें बच्चों के खेलने के लिए पर्याप्त जगह, रोशनी, हवा और स्वच्छ शौचालय की व्यवस्था होनी चाहिए।
- **प्रशिक्षित शिक्षक :** शिक्षकों को बच्चों के मनोविज्ञान और उनकी विकासात्मक ज़रूरतों की गहरी समझ होनी चाहिए। वे बच्चों के साथ प्रेमपूर्ण और उत्तरदायी संबंध बनाने में सक्षम हों।
- **बाल-केंद्रित पाठ्यक्रम :** यहाँ शिक्षा रटने के बजाय पूरी तरह से खेल और गतिविधि आधारित (Play-based) होनी चाहिए।
- **समावेशी वातावरण :** केंद्र में विकलांग बच्चों और समाज के हर वर्ग के बच्चों के लिए समान अवसर और सुविधाएँ होनी चाहिए।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

10

प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की देखभाल

देखभाल का अर्थ और क्षेत्र : देखभाल का मतलब केवल भोजन देना नहीं, बल्कि बच्चों को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित रखना है।

- **स्वास्थ्य और पोषण:** बच्चों की वृद्धि के लिए संतुलित आहार (जैसे दूध, दालें, फल) और समय पर टीकाकरण बहुत ज़रूरी है।
- **स्वच्छता की आदतें :** बच्चों में हाथ धोने, ब्रश करने और व्यक्तिगत सफाई की आदत डालना उन्हें बीमारियों से बचाता है
- **सुरक्षा और बचाव :** केंद्र का वातावरण 'बाधा-मुक्त' और सुरक्षित होना चाहिए ताकि बच्चों को चोट न लगे।

तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों की देखभाल के सिद्धांत

1. संवेदनशील एवं प्रतिक्रियात्मक वातावरण

- छोटे बच्चों को ऐसा वातावरण चाहिए जहाँ उन्हें प्यार, सुरक्षा और ध्यान मिले।
- जब बच्चा कुछ करे या संकेत दे, तो देखभाल करने वाला तुरंत प्रतिक्रिया दे।
- इससे बच्चे का मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक विकास अच्छा होता है।

2. प्रतिक्रियात्मक संबंध और सहज जीवन कौशल

- देखभाल करने वाला बच्चे से बात करे, खेले और उसे समझे।
- रोज़मर्रा की गतिविधियों (खेलना, बोलना, चलना) से बच्चे नई चीज़ें सीखते हैं।
- इससे बच्चे में आत्मविश्वास, भाषा और सामाजिक कौशल विकसित होते हैं।

3. तनाव के स्रोत को कम करना

- बच्चों को डर, उपेक्षा, हिंसा या ज्यादा दबाव से दूर रखना चाहिए।
- शांत और सुरक्षित माहौल होने से बच्चा स्वस्थ और खुश रहता है।
- कम तनाव से बच्चे का दिमाग और शरीर दोनों बेहतर विकसित होते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का महत्व

बच्चों के सही विकास के लिए उनकी शारीरिक जरूरतों का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। यदि भोजन, नींद, स्वास्थ्य और स्वच्छता का सही ध्यान रखा जाए तो बच्चा स्वस्थ और मजबूत बनता है।

- **पौष्टिक आहार :** नवजात शिशु के लिए माँ का दूध सबसे अच्छा और पूर्ण आहार माना जाता है। छह महीने तक बच्चे को केवल माँ का दूध देना चाहिए क्योंकि इसमें आवश्यक पोषक तत्व होते हैं और यह बच्चे को बीमारियों से बचाता है।
- **सुरक्षा, पर्याप्त नींद एवं व्यायाम :** बच्चों को सुरक्षित वातावरण और पर्याप्त नींद की आवश्यकता होती है। नवजात शिशु लगभग 18 घंटे तक सोते हैं और बड़े होने पर उनकी नींद का समय कम हो जाता है। खेलना और शरीर को हिलाना-डुलाना भी उनके लिए व्यायाम का काम करता है।
- **प्रतिरक्षण एवं प्रोत्साहक स्वास्थ्य देखभाल :** बच्चों को बीमारियों से बचाने के लिए समय-समय पर टीकाकरण कराना जरूरी है। टीके शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं और कई गंभीर बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करते हैं।
- **सफाई एवं स्वच्छता :** सफाई और स्वच्छता बच्चों के स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है। बच्चे के शरीर, कपड़ों और आसपास के वातावरण को साफ रखना चाहिए। इससे संक्रमण और बीमारियों से बचाव होता है।

देखभाल हेतु वातावरण के प्रकार : पारिवारिक एवं गैर-पारिवारिक

बच्चों की देखभाल दो प्रकार के वातावरण में हो सकती है-

1. **पारिवारिक देखभाल –** जब बच्चे की देखभाल माता-पिता या परिवार के सदस्य करते हैं।
2. **गैर-पारिवारिक देखभाल –** जब बच्चे की देखभाल डे-केयर, नर्सरी या बाल देखभाल केंद्र में की जाती है।

दोनों ही परिस्थितियों में बच्चों को सुरक्षित और सहयोगात्मक वातावरण मिलना चाहिए।

प्रारंभिक वर्ष आगामी अधिगम का आधार : गुणवत्तापूर्ण देखभाल के तरीके

प्रारंभिक बाल्यावस्था बच्चे के पूरे जीवन के विकास की नींव होती है। इस समय यदि बच्चे को अच्छी देखभाल और सही मार्गदर्शन मिलता है, तो उसका भविष्य बेहतर बनता है।

- **रुचि, जिज्ञासा और अभिप्रेरणा :** छोटे बच्चों में स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा होती है। वे नई चीजों को देखना और समझना चाहते हैं। यदि उन्हें सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो उनकी रुचि और सीखने की क्षमता बढ़ती है।
- **संबंध बनाना :** माता-पिता, परिवार और शिक्षकों के साथ अच्छे संबंध बच्चों के विकास के लिए जरूरी होते हैं। इससे बच्चे में आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल विकसित होते हैं।
- **खेल एवं आनंदमयी अन्तःक्रिया :** खेल बच्चों के विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। खेल-खेल में बच्चे भाषा, सोचने की क्षमता और सामाजिक व्यवहार सीखते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- **लयबद्धता एवं देखभाल :** बच्चों के लिए नियमित दिनचर्या बहुत जरूरी होती है। जब भोजन, खेल और सोने का समय नियमित होता है, तो बच्चे को सुरक्षा का अनुभव होता है और उसका विकास बेहतर होता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए 'देखभाल में निरंतरता' क्यों आवश्यक है?

उत्तर - बच्चों के लिए देखभाल में निरंतरता इसलिए ज़रूरी है क्योंकि इससे बच्चे और देखभाल करने वाले के बीच एक गहरा विश्वास और 'लगाव' विकसित होता है। यदि देखभाल करने वाला बार-बार बदलता है, तो बच्चा असुरक्षित महसूस करता है और डरा हुआ रहता है। निरंतरता बच्चे को भावनात्मक स्थिरता और सुरक्षा का अनुभव कराती है।

प्रश्न 2: प्रारंभिक वर्षों में संवेदी उत्तेजना का क्या महत्व है?

उत्तर - बच्चे अपनी पाँचों इंद्रियों (देखना, सुनना, छूना, सूँघना और चखना) के माध्यम से दुनिया को समझते हैं।

- **जिज्ञासा का आधार :** संवेदी उत्तेजना बच्चों में जिज्ञासा और सीखने की प्रेरणा जगाती है।
- **मस्तिष्क विकास :** जब हम बच्चों को रंगीन चीज़ें दिखाते हैं या लोरी सुनाते हैं, तो उनके मस्तिष्क की कोशिकाएं सक्रिय होती हैं।
- **अधिगम :** यह अनुभव बच्चों की सोचने और समझने की शक्ति का आधार बनते हैं, जो आगे चलकर उनकी स्कूली शिक्षा में मदद करते हैं।

प्रश्न 3: बच्चों के स्वास्थ्य के लिए टीकाकरण की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - टीकाकरण बच्चों को जानलेवा बीमारियों (जैसे पोलियो, खसरा, काली खाँसी और टेटनस) से बचाने का एक प्रभावी तरीका है। शुरुआती वर्षों में बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, इसलिए समय पर टीके लगवाना उन्हें सुरक्षा प्रदान करता है। यह न केवल बच्चे को बीमार होने से बचाता है, बल्कि उसके स्वस्थ शारीरिक और मानसिक विकास को भी सुनिश्चित करता है। टीकाकरण बच्चे के जीवन के लिए एक अनिवार्य 'सुरक्षा कवच' है।

प्रश्न 4: बच्चों की देखभाल के लिए 'माता-पिता और शिक्षक' के बीच सहयोग क्यों ज़रूरी है?

उत्तर - बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए घर और ईसीसीई (ECCE) केंद्र के बीच तालमेल होना बहुत आवश्यक है।

- **सूचनाओं का आदान-प्रदान :** शिक्षक को बच्चे की घर की आदतों का पता होना चाहिए और माता-पिता को केंद्र में बच्चे की प्रगति की जानकारी होनी चाहिए।
- **एकरूपता :** यदि घर और स्कूल में देखभाल का तरीका एक जैसा होगा, तो बच्चा भ्रमित नहीं होगा और बेहतर सीखेगा।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- **समस्या की पहचान :** आपसी बातचीत से बच्चे में किसी भी विकासात्मक देरी या व्यवहार संबंधी समस्या की पहचान जल्दी की जा सकती है।
- **भरोसा :** माता-पिता का केंद्र पर विश्वास बढ़ता है, जिससे बच्चा भी उस माहौल में खुद को सुरक्षित महसूस करता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

11

खेल और प्रारंभिक अधिगम

परिचय

बच्चे स्वभाव से ही खोजी और जिज्ञासु होते हैं। यदि उन्हें सही वातावरण मिले, तो खेल के माध्यम से उनका शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक विकास बहुत तेज़ी से होता है।

खेल का अर्थ

1. स्वैच्छिक और आनंददायक : खेल एक ऐसी गतिविधि है जिसे बच्चा अपनी मर्ज़ी से करता है और इसमें उसे खुशी मिलती है।

2. प्रक्रिया पर ध्यान : खेल में बच्चे का ध्यान परिणाम (Result) पर नहीं, बल्कि खेलने की प्रक्रिया (Process) पर होता है।

3. स्व-प्रेरित : बच्चा इसे किसी बाहरी इनाम या दबाव के बिना, केवल अपनी आंतरिक प्रेरणा से खेलता है।

खेल का महत्व : खेल बच्चे के सर्वांगीण विकास में निम्नलिखित भूमिका निभाता है:

- **शारीरिक विकास :** दौड़ने, कूदने और पकड़ने से मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं और शरीर का संतुलन बेहतर होता है।
- **संज्ञानात्मक विकास :** पहेलियाँ सुलझाने और चीज़ों को क्रम में लगाने से तर्क शक्ति और याददाश्त बढ़ती है।
- **सामाजिक और भावनात्मक विकास :** खेल के दौरान बच्चे साझा करना (Sharing), अपनी बारी का इंतज़ार करना और अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करना सीखते हैं।
- **मनोरंजनात्मक उपयोगिता :** खेल गतिविधियाँ आनंद देती हैं और बच्चों को मानसिक तनाव से मुक्त रखती हैं। यह बच्चों को संवेगात्मक संतोष प्रदान करता है और उन्हें ऊबने से बचाता है।

खेल के प्रकार : खेल के मुख्य प्रकार इस प्रकार हैं:

पियाजे (Piaget) के अनुसार खेल के स्तर

पियाजे ने विकास की अवस्थाओं के आधार पर खेल को तीन भागों में बाँटा है:

- **अभ्यास खेल (Practice Play - 0 से 2 वर्ष):** यह संवेदी-गतिक अवस्था (sensorimotor stage) से मेल खाता है। इसमें बच्चा अपनी इंद्रियों का उपयोग करता है, जैसे वस्तुओं को मुँह में रखना या थूक के बुलबुले बनाना।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- **प्रतीकात्मक खेल (Symbolic Play - 2 से 7 वर्ष):** इस अवस्था में बच्चा वस्तुओं को किसी चीज़ के 'प्रतीक' के रूप में उपयोग करता है, जैसे लकड़ी के टुकड़े को फोन समझना। इसमें काल्पनिक खेल शामिल होते हैं।
- **नियमों वाले खेल (Games with Rules - 7 से 11 वर्ष):** यहाँ खेल अधिक सामाजिक और संगठित हो जाते हैं। बच्चा खेल के जटिल नियमों को समझना और उनका पालन करना शुरू कर देता है।

स्माइलेंस्की (Smilansky) के खेल कौशल

स्माइलेंस्की ने खेल को चार अवस्थाओं में विभाजित किया है:

- **व्यावहारिक खेल (Functional Play):** यह पहली अवस्था है जहाँ बच्चा वस्तुओं के साथ खेलता है और अपने गत्यात्मक कौशल (motor skills) का उपयोग करता है।
- **रचनात्मक खेल (Constructive Play):** इसमें बच्चा वस्तुओं का प्रयोग करके कुछ 'निर्माण' करता है, जैसे ब्लॉकों से मीनार बनाना। यहाँ बच्चा अपनी सृजनात्मकता का परिचय देता है।
- **नियमों वाले खेल:** बच्चा नियमों की अवधारणा को समझकर प्रतियोगिता वाले खेलों में भाग लेता है।

पार्टन (Parten) के सामाजिक खेल के स्तर

पार्टन ने इस बात पर जोर दिया कि खेल सामाजिक कुशलता बढ़ाने में सहायक होते हैं। उन्होंने इसके 6 स्तर बताए हैं:

- **अव्यस्त खेल (Unoccupied play - 0 से 2 वर्ष):** बच्चा सक्रिय रूप से नहीं खेलता, बस आसपास की चीज़ों को देखता या हाथ-पैर चलाता है।
- **एकल खेल (Solitary play):** बच्चा अकेला खेलता है और दूसरों की गतिविधियों में रुचि नहीं दिखाता। इससे रचनात्मक शक्ति का विकास होता है।
- **दर्शक खेल (Onlooker Play - 2.5 से 3.5 वर्ष):** बच्चा दूसरों को खेलते हुए देखता है, लेकिन खुद शामिल नहीं होता। वह खेल के बारे में जानकारी जुटाने की कोशिश करता है।
- **समानान्तर खेल (Parallel Play - 2.5 से 3.5 वर्ष):** बच्चे साथ-साथ खेलते हैं, एक जैसे खिलौनों का उपयोग भी करते हैं, पर एक-दूसरे के साथ सीधे तौर पर नहीं जुड़ते।
- **सहचारी खेल (Associative play - 3 से 4 वर्ष):** बच्चे साथ खेलना शुरू करते हैं और खिलौने बदलते हैं, लेकिन उनका कोई साझा सामूहिक लक्ष्य नहीं होता।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

खेल में शिक्षक की भूमिका

1. सुविधाप्रदाता : शिक्षक को बच्चों के लिए सुरक्षित स्थान और विविध खेल सामग्री (जैसे ब्लॉक, खिलौने, मिट्टी) उपलब्ध करानी चाहिए।

2. निरीक्षक : शिक्षक को बच्चों को खेलते समय ध्यान से देखना चाहिए ताकि वह उनकी रुचि और विकास की गति को समझ सके।

3. मार्गदर्शक : जहाँ ज़रूरत हो, शिक्षक को खेल में शामिल होकर बच्चों को नए तरीके सुझाने चाहिए।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: खेल की कोई दो मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर - खेल पूरी तरह से स्वैच्छिक होता है, यानी बच्चा इसे अपनी इच्छा से चुनता है। 2. यह आनंददायक होता है और इसमें बच्चे का ध्यान लक्ष्य के बजाय खेलने की प्रक्रिया और मजे पर होता है। इसमें कोई बाहरी दबाव नहीं होता।

प्रश्न 2: संज्ञानात्मक विकास में खेल की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - खेल बच्चों के मस्तिष्क को सक्रिय करता है। जब बच्चे ब्लॉक से इमारत बनाते हैं या पहेलियाँ सुलझाते हैं, तो उनकी सोचने, समझने और समस्या समाधान की क्षमता विकसित होती है। खेल के माध्यम से वे वर्गीकरण (छाँटना), आकार, रंग और मात्रा जैसी जटिल अवधारणाओं को आसानी से समझ लेते हैं। यह उनकी याददाश्त और ध्यान केंद्रित करने की शक्ति को भी बढ़ाता है।

प्रश्न 3: सामाजिक विकास के लिए समूह खेल क्यों आवश्यक है?

उत्तर - समूह खेल बच्चों को समाज में रहने के नियम सिखाते हैं। इसके माध्यम से बच्चे दूसरों के साथ मिलकर काम करना (सहयोग), अपनी बारी का इंतज़ार करना और अपनी चीज़ें साझा करना सीखते हैं। यह उनमें नेतृत्व के गुण विकसित करता है और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना सिखाता है, जो एक स्वस्थ सामाजिक व्यवहार के लिए बहुत ज़रूरी है।

प्रश्न 4: संज्ञानात्मक और मनो-गत्यात्मक डोमेन के लिए उपयुक्त गतिविधियों के उदाहरण दें।

उत्तर – संज्ञानात्मक और मनो-गत्यात्मक डोमेन के लिए उपयुक्त गतिविधियों के उदाहरण :

- **संज्ञानात्मक :** पहेलियाँ, कहानी पूरी करना, स्मृति खेल और विज्ञान के सरल प्रयोग।
- **मनो-गत्यात्मक :** मोतियों को पिरोना, मिट्टी से आकृतियाँ बनाना (clay modeling), कागज़ फाड़ना और चिपकाना, दौड़ना और कूदना।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 5: अभिनयपूर्ण या नाटकीय खेल' (Dramatic Play) बच्चों के लिए क्यों ज़रूरी है?

उत्तर - काल्पनिक खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है:

1. **कल्पना और सृजनात्मकता:** इससे बच्चों की सोचने की शक्ति और रचनात्मकता का विकास होता है ।
2. **सामाजिक समझ:** भूमिका निभाने के माध्यम से बच्चे समाज के विभिन्न व्यवहारों और नियमों को समझते हैं ।
3. **भावनात्मक राहत:** यह बच्चों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सुरक्षित माध्यम प्रदान करता है ।
4. **भाषा कौशल:** अभिनय करते समय बच्चे भाषा का बेहतर उपयोग करना सीखते हैं ।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

13

बच्चे किस प्रकार सीखते हैं (प्रारंभिक अधिगम एवं शिक्षण)

बच्चों के विकास एवं अधिगम के सूचक

- **मस्तिष्क का विकास :** बच्चों का दिमाग उपयोग करने से विकसित होता है; 'इसका उपयोग करें या इसे खो दें'।
- **विकासात्मक मील के पत्थर :** गर्दन संभालना, रेंगना, खड़ा होना और आवाज़ें निकालना विकास के प्रमुख संकेत हैं।
- **प्रगति की पहचान :** बच्चों में होने वाले बदलावों को देखकर यह पता लगाया जाता है कि वे सीख रहे हैं।

बच्चे कैसे सीखते हैं?

- **सीखने के तरीके :** कुछ बच्चे देखकर, कुछ सुनकर और कुछ काम को खुद करके सीखते हैं।
- **खेल का महत्व :** शुरुआती वर्षों (जन्म से 6 वर्ष) में खेल, कहानियाँ, बातचीत और गीतों के माध्यम से सीखना सबसे प्रभावी होता है।
- **सक्रिय भागीदारी :** बच्चे पर्यावरण के साथ सक्रिय रूप से जुड़कर और सवाल पूछकर (जैसे: "क्यों?") बेहतर सीखते हैं।

विकास के आयाम अथवा सीखने के क्षेत्र

विकास के सभी क्षेत्र एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और एक अनुभव कई क्षेत्रों पर असर डाल सकता है।

- **शारीरिक-गत्यात्मक विकास:** इसमें स्थूल गत्यात्मक कौशल (दौड़ना, कूदना) और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल (उंगलियों का तालमेल) शामिल हैं।
- **भाषा विकास और संप्रेषण :** इसमें सुनना, बोलना, शब्दावली बढ़ाना और प्रारंभिक साक्षरता (अक्षर और ध्वनि पहचान) शामिल है।
- **संज्ञानात्मक विकास :** इसमें जिज्ञासा, सवाल पूछना, वर्गीकरण करना, और समस्या सुलझाने जैसे कौशल आते हैं।
- **कला और सौंदर्यबोध की सराहना का विकास :** विभिन्न कला रूपों, नृत्य और संगीत के माध्यम से अभिव्यक्ति और उनकी सराहना करना।
- **व्यक्तिगत, सामाजिक और भावनात्मक विकास :** इसमें स्वयं की पहचान, आत्म-नियंत्रण, सहयोग और दूसरों की भावनाओं को समझना शामिल है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

अधिगम को बढ़ावा देना

- **बाल-केंद्रित दृष्टिकोण :** शिक्षण रणनीतियाँ बच्चों की रुचियों, क्षमताओं और सामाजिक संदर्भ पर आधारित होनी चाहिए।
- **सक्रिय जुड़ाव :** गतिविधियों के दौरान बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय रहना चाहिए।
- **खेल का महत्व :** खेल जिज्ञासा जगाता है, रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है और भावनात्मक संतुलन विकसित करता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल का क्या महत्व है?

उत्तर - सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल उंगलियों और हाथों की छोटी मांसपेशियों के नियंत्रण से संबंधित हैं। यह बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन्हीं के माध्यम से बच्चा लिखना, चित्र बनाना, बटन लगाना और खुद से खाना खाना सीखता है। इनके बिना बच्चा दैनिक जीवन के छोटे और बारीक काम नहीं कर पाता।

प्रश्न 2: संज्ञानात्मक विकास को परिभाषित कीजिए।

उत्तर - संज्ञानात्मक विकास एक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा अपने आस-पास की दुनिया को समझता है। इसमें ध्यान केंद्रित करना, याद रखना, कल्पना करना, समस्याओं को हल करना और निर्णय लेना शामिल है। यह विकास बच्चे को तार्किक रूप से सोचने और सीखने में मदद करता है।

प्रश्न 3: विकास के क्षेत्रों की 'अन्योन्याश्रयता' का क्या मतलब है?

उत्तर - इसका मतलब है कि विकास के सभी क्षेत्र (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक) एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं । एक क्षेत्र में होने वाली कमी या प्रगति दूसरे क्षेत्र को सीधे प्रभावित करती है; जैसे शारीरिक अस्वस्थता बच्चे की सीखने की रुचि को कम कर सकती है।

प्रश्न 4: बच्चों में भाषा विकास के विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर - बच्चों में भाषा का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है:

- **सुनना और समझना :** सबसे पहले बच्चा ध्वनियों और शब्दों को सुनना व पहचानना शुरू करता है।
- **मौखिक अभिव्यक्ति :** वह आवाज़ें निकालने (जैसे कूकना या बबलाना) से शुरू करके छोटे शब्द और फिर वाक्य बोलना सीखता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- **साक्षरता :** इसके बाद वह चित्रों और अक्षरों को पहचानना (पढ़ना) और अंत में उन्हें लिखना सीखता है। एक समृद्ध भाषाई वातावरण इस प्रक्रिया को तेज़ करता है।

प्रश्न 5 : विकास के विभिन्न क्षेत्र एक-दूसरे पर कैसे निर्भर करते हैं? उदाहरण सहित विस्तार से समझाइए।

उत्तर - विकास के सभी क्षेत्र (शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भाषाई) स्वतंत्र नहीं होते, बल्कि वे एक एकीकृत तरीके से काम करते हैं। यदि एक क्षेत्र में विकास धीमा होता है, तो उसका प्रभाव दूसरे क्षेत्रों पर भी पड़ता है।

उदाहरण 1 : यदि कोई बच्चा शारीरिक रूप से अस्वस्थ है, तो वह खेल-कूद में भाग नहीं ले पाएगा। इससे उसका सामाजिक विकास (दोस्तों के साथ घुलना-मिलना) और संज्ञानात्मक विकास (खेलों के माध्यम से सीखना) दोनों प्रभावित होंगे।

उदाहरण 2 : भाषा विकास सीधे तौर पर सामाजिक विकास से जुड़ा है। यदि बच्चा बोलना नहीं सीखता, तो वह अपनी ज़रूरतें व्यक्त नहीं कर पाएगा, जिससे वह चिड़चिड़ा या भावनात्मक रूप से अस्थिर हो सकता है। अतः, ECCE का लक्ष्य किसी एक क्षेत्र का नहीं, बल्कि बच्चे का 'सर्वांगीण विकास' होना चाहिए क्योंकि ये सभी धागे एक ही कपड़े का हिस्सा हैं।

प्रश्न 6: स्थूल गत्यात्मक और सूक्ष्म गत्यात्मक विकास में अंतर स्पष्ट कीजिए और इनके विकास के लिए कुछ गतिविधियों का सुझाव दीजिए।

उत्तर - स्थूल गत्यात्मक और सूक्ष्म गत्यात्मक विकास में अंतर :

अंतर का आधार	**स्थूल गत्यात्मक विकास**	**सूक्ष्म गत्यात्मक विकास**
परिभाषा	इसमें शरीर की बड़ी मांसपेशियों का उपयोग और नियंत्रण शामिल है।	इसमें हाथों और उंगलियों की छोटी मांसपेशियों का तालमेल शामिल है।
मुख्य लक्ष्य	शरीर का संतुलन बनाना और बड़ी गतिविधियों में दक्षता हासिल करना।	आंखों और हाथों के बीच सटीक तालमेल बनाना।
गतिविधियाँ	चलना, दौड़ना, कूदना, रेंगना, चढ़ना, झूला झूलना और गेंद फेंकना।	धागा पिरोना, कागज फाड़ना, काटना, चित्र बनाना, रंग भरना और **मिट्टी का काम**।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/